विशेषांक : 17

जागरण

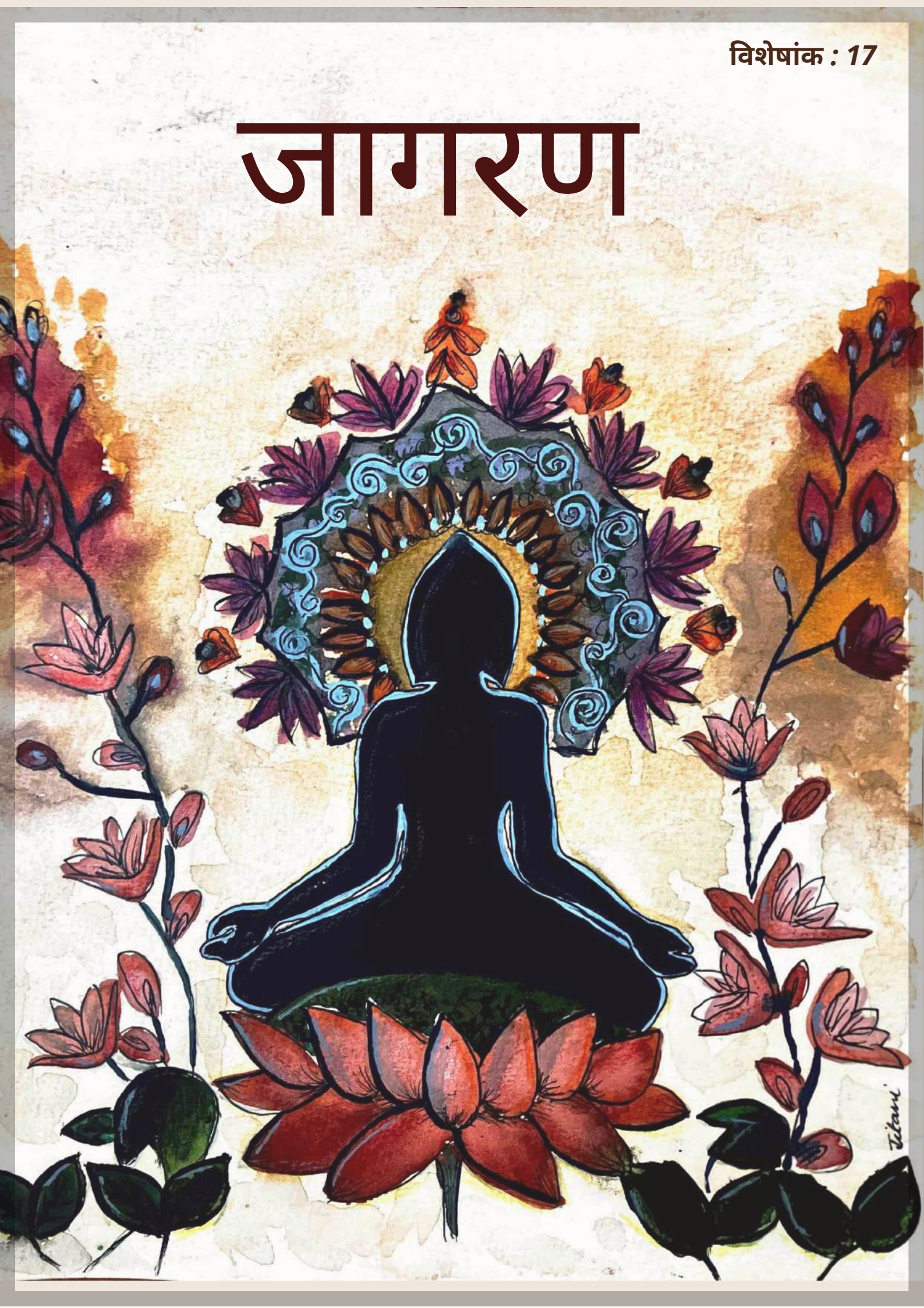

संपादक की कलम से .....

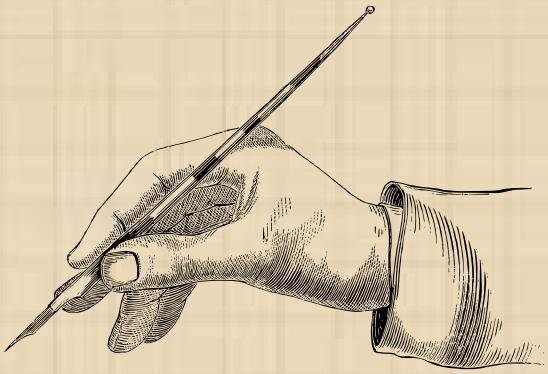

प्रिय सुधी पाठकगण,

जागरण पत्रिका के सत्रहवें अंक के साथ आपसे एक बार पुनः जुड़ते हुए मुझे अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। इस पत्रिका ने हमारे विद्यालय के नौनिहालों को हमेशा ही रचनात्मकता के लिए प्रोत्साहित किया है। जागरण पत्रिका ने विद्यालय पटल पर हिंदी भाषा को सदैव सशक्त बनाने का प्रयास किया है। गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी यह पत्रिका अपने दायित्व की पूर्ति के लिए कटिबद्ध है।

अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम लेखन है। लेखन के माध्यम से रचनाकार अपने भावनात्मक उद्गारों को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है। हमने इस पत्रिका के माध्यम से विद्यालय के अधिकाधिक नवोदित रचनाकारों की रचनाओं को संजोने का भरसक प्रयत्न किया है। लेखन विधा के अतिरिक्त चित्रात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से भी बाल प्रतिभाओं ने अपने मनोभावों को प्रस्तुत किया है। पत्रिका में रोचक तथ्य, हास्य-विनोद एवं बौद्धिक परीक्षण जैसे पहलुओं का भी समागम हुआ है। रचनात्मक लेखन में कहानियों, निबंधों, कविताओं और रोचक संस्मरण आदि को भी सम्मिलित किया गया है।

जागरण की प्रधान संपादिका के रूप में, मैं सर्वप्रथम विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. अमित जुगरान जी को धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ, जिन्होंने इस पत्रिका के प्रकाशन में अपना भरसक सहयोग एवं उचित मार्गदर्शन किया है। इसी क्रम में, मैं हिंदी विभाग के समस्त गुरुजनों का भी आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने समय-समय पर अपने अमूल्य सुझाव एवं उचित मार्गदर्शन प्रदान कर इस पत्रिका के सफल प्रकाशन में अमूल्य सहयोग प्रदान किया है। मुझे आशा है कि आप इन रचनाओं को एक बार पुनः अपने हृदय में एक विशेष स्थान देंगे और हमारे साथियों की रचनात्मकता को प्रोत्साहित करेंगे। आपका सहयोग एवं सुझाव सदैव सादर प्रार्थनीय है।

हिया केशन
प्रधान संपादिका- जागरण
असम वैली स्कूल
बालीपारा, सोनितपुर

ईमेल - chair_hindi@assamvalleyschool.com

अनुक्रमणिका

पृष्ठ 01 संकल्प की शक्ति – विवेक गटानी

पृष्ठ 02 अनमोल बचपन - सोहम अग्रवाल, उज्ज्वल भविष्य की ओर - गर्व केडिया

पृष्ठ 03 लालच का परिणाम - अनुष्का जितानी

पृष्ठ 04 अनोखी दुनिया - केशव सुल्तानियाँ

पृष्ठ 05 स्कूल से छुट्टी - कृष्णम् अग्रवाल

पृष्ठ 06 शरारती बंदर - अनन्या यादव

पृष्ठ 07 सज़ा का डर, सुरक्षा (लघु कथाएँ) - शांभवी चौहान, चंद्रयान तीन - यशप्रीत कौर

पृष्ठ 08 कवि और कविताएँ - हिया केशन, रंग-बिरंगी दुनिया - अनुष्का अय्यर, पहेलियाँ - शांभवी चौहान

पृष्ठ 09 कामयाब - ध्रुव पृथानी, फूलों की दुनिया - सौम्या अग्रवाल, सारथी - प्रदान्या कश्यप, मेरा भाई- कृष्णम् अग्रवाल

पृष्ठ 10 वर्षा की बूँदें - तनिष्का शर्मा, सरकस की यात्रा - अर्पित यादव

पृष्ठ 11 बारिश - अनन्या यादव, पेड़ लगाओ - शुभम माहेश्वरी, ऐसी होती है माँ - आरोही अग्रवाल, माँ - निकुंज नारायण बजाज

पृष्ठ 12 नमन है तुम्हें - अनुष्का जितानी, रोचक तथ्य

पृष्ठ 13 विभागीय गतिविधियाँ - श्रीमान संजय कुमार दीक्षित

पृष्ठ 14 छूकर मेरे मन को - हिमानिश जालान (इवेंट मैंनेजमेंट हेड)

पृष्ठ 15 छूकर मेरे मन को – क्रिशिव कलिता (इवेंट मैंनेजमेंट प्रीफेक्ट)

पृष्ठ 16 छूकर मेरे मन को – सुजानवीर आतरिया (कप्तान, मानस सदन), ओजस्वी अग्रवाल (कैप्टन, इण्डियन क्वायर)

पृष्ठ 17 छूकर मेरे मन को – अवन्या जसरासरिया (कैप्टन, इण्डियन क्वायर), बूझो तो जानें, चित्रों में अंतर खोजिए

पृष्ठ 18 देखो हँस न देना - शांभवी चौहान, संपादक मण्डल

संकल्प की शक्ति

रमन एक अमीर परिवार का लड़का था। उसे आराम भरा जीवन बेहद पसंद था। पिता की धन-दौलत के कारण वह हमेशा ऐशो-आराम की ज़िंदगी जीना पसंद करता था। इस कारण वह अपने छोटे-बड़े कामों के लिए हमेशा दूसरों पर निर्भर रहता था। दूसरों पर निर्भर रहने के कारण उसकी ज़िंदगी में कोई अनुशासन नहीं रह गया था। वह जब तक मन होता, तब तक सोता रहता और जब मन होता तो वह जाग कर घूमने निकल जाता था। उसके इस व्यवहार के कारण सभी लोग परेशान रहते थे। पिता के पैसों की बदौलत उसे अच्छे स्कूल में दाखिला भी मिल गया। वह स्कूल में मन लगाकर कोई काम नहीं करता था। उसके पास अपनी गाड़ी थी जिसमें ड्राइवर रोज स्कूल पहुँचाने जाता और छुट्टी होने पर घर लेकर आता था।

पैसा अधिक होने के कारण उसके अनेक दोस्त थे। वह सप्ताह में कई बार शाम को पार्टियों में दोस्तों के साथ दिखाई देता था। पढ़ाई में कम ध्यान देने के कारण दसवीं बोर्ड की परीक्षा में उसे केवल 50 प्रतिशत अंक ही मिले। अंकपत्र देखकर उसके पिता को बहुत क्रोध आया। शाम के समय पिता ने रमन को बहुत डाँटा और समझाया परंतु रमन पर उसका कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा।

कहा जाता है कि सब दिन होत न एक समान। रमन की ज़िंदगी बहुत अच्छे से चल रही थी कि अचानक विश्व में तेजी से फैल रही कोरोना की बीमारी ने भारत में भी अपने पाँव पसारने शुरू कर दिए। न जाने इस बीमारी के कारण कितने लोग मारे गए और कितनों के व्यापार ठप हो गए। कोरोना के बढ़ते प्रभाव को देखकर भारत सरकार ने देश में लॉकडाउन लगा दिया जिसके कारण कई व्यापार दम तोड़ने लगे। ऐसे में रमन के पिता का व्यापार भी कमज़ोर पड़ने लगा।

पिताजी भी एक दिन कोरोना की चपेट में आकर बिस्तर पर पड़ गए। अब रमन एकदम अकेला पड़ गया। वह कभी पिता का व्यापार संभालता तो कभी अस्पताल जाकर अपने पिता की देखभाल करता।

इस बदलती परिस्थिति ने इतना तो किया कि रमन को वास्तविकता के दर्शन होने लगे। अब उसे पता चलने लगा कि पैसा कितनी मुश्किल से कमाया जाता है और घर-परिवार चलाने के लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है।

रमन के व्यवहार में बदलाव होने लगा। अब वह एक लापरवाह संतान की जगह एक ज़िम्मेदार इंसान बन गया। वह रोज अस्पताल में भर्ती अपने पिता की देखभाल करता, दिन में अपनी पढ़ाई करता और शाम को अपने पिता के व्यापार का काम संभालता। रमन के बदलते इस व्यवहार को देखकर उसके पिता को बहुत खुशी हुई। कुछ दिनों बाद पिता के ठीक होने पर अस्पताल से उन्हें घर भेज दिया गया।

जब रमन के पिता ने इतनी लगन और मेहनत से रमन को सारे कामों को संभालते देखा तो उन्हें बहुत खुशी हुई। उन्होंने रमन को अपने पास बिठाते हुए कहा कि आज मुझे असली दौलत मिल चुकी है। अब मैं बहुत ही खुश हूँ। रमन ने कहा कि पिताजी विपरीत परिस्थितियों ने मुझे जो शिक्षा दी है, वह शिक्षा मुझे आप और मेरे गुरुजन भी नहीं दे पाए। मैं संकल्प ले चुका हूँ कि मैं कभी भी अपना समय और पैसा बेकार नहीं करूँगा। रमन के पिताजी को रमन की यह बात सुनकर बहुत अच्छा लगा।

इसीलिए कहा जाता है कि कभी-कभी हम किसी को वह शिक्षा नहीं दे पाते, जो शिक्षा उसे समय और परिस्थितियों से मिल जाती है।

विवेक गटानी
कक्षा - ग्यारहवीं

अनमोल बचपन

बचपन अनमोल यादों का खजाना है जो हमारे दिलों में हमेशा के लिए अंकित हो जाता है। यह वह समय था, जब जीवन सरल था, चिंताएँ कम थीं और प्रत्येक दिन एक नए रोमांच का वादा करता था। जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, हम अक्सर खुद को मासूमियत और आश्चर्य के उन लापरवाह दिनों को याद करते हुए पाते हैं।

बचपन की सबसे ज्वलंत यादों में से एक है- बाहर खेलने का असीमित आनंद। चाहे वह समुद्र तट पर रेत के महल बनाना हो, दोस्तों के साथ साइकिल दौड़ाना हो, या पड़ोस के पार्क में टैग खेलना हो, दुनिया हमारे लिए खेल का मैदान थी, और हर पल मनोरंजन और खोज का अवसर था। ऐसा लग रहा था जैसे सूरज तेज़ चमक रहा है, और समय लगातार बढ़ता जा रहा है।

एक और यादगार स्मृति कल्पना का जादू है। हम कार्डबोर्ड बॉक्स अंतरिक्ष यान में दूर की आकाशगंगाओं की खोज करने वाले अंतरिक्ष यात्री हो सकते हैं, अपने ही पीछे समय में अज्ञात क्षेत्रों की यात्रा करने वाले बहादुर खोजकर्ता, या अपनी कल्पना के दायरे में महाकाव्य खोज पर निकलने वाले निडर साहसी। वास्तविकता की सीमाएँ धुँधली हो गईं और संभावनाएँ असीमित हो गईं।

बचपन भी पहली बार का समय था - स्कूल का पहला दिन, आइसक्रीम का पहला स्वाद, बिना प्रशिक्षण के पहली बार बाइक चलाना। प्रत्येक नया अनुभव एक मील का पत्थर था, और उपलब्धि की भावना अतुलनीय थी। छोटे-छोटे काम भी मन में अपार ऊर्जा और उत्साह का संचार कर देते थे।

जैसे-जैसे हम वयस्कता की हलचल से गुज़रते हैं, अपने बचपन के दिनों को याद करने के लिए एक पल निकालना एक पुरानी, प्रिय कहानी की किताब को फिर से देखने जैसा होता है। यह हमें उस सादगी, आश्चर्य और आनंद की याद दिलाता है जो कभी हमारे जीवन को परिभाषित करता था। तो आइए, उन यादों को संजोकर उन्हें अपने पास रखें, क्योंकि वे धागे हैं जो हमारे जीवन की कशीदाकारी बुनते हैं, हमें उन चौड़ी आँखों वाले, लापरवाह बच्चों से जोड़ते हैं जो हम एक समय थे।

सोहम अग्रवाल
कक्षा — नवमीं

उज्ज्वल भविष्य की ओर

हर दिन भारत की प्रगति का आँकड़ा मुझे यह सोचने पर मजबूर करता है कि आने वाले समय में मेरा देश, प्रगति की ऊँचाई छू कर ही रहेगा। मुझे विश्वास है कि भारत का भविष्य उज्ज्वल है। इस विश्वास का कारण मेरा जन्मस्थान, गुड़गाँव है जो कि अब गुरुग्राम है। यह शहर भारत के हरियाणा में स्थित है, आज से तकरीबन १५ साल पहले यह गाँव एक रेगिस्तान के जैसा था, हर तरफ सिर्फ रेत के टीले और बंजर जमीनें थीं। देखते ही देखते कुछ दिनों के भीतर यह गाँव शहर में परिवर्तित हो गया जो आज दूसरे देश के शहरों की बराबरी करने लगा।

अपने इस छोटे से जीवन में मैंने यहाँ बड़े-बड़े परिवर्तन देखे। यह कितना सुनियोजित ढंग से बढ़ा है। आई-टी सेक्टर और एम. एन. सी. से परिचय ने इस शहर की प्रगति में बड़ा योगदान दिया। लोगों की जरूरत के हिसाब से यहाँ हाइवे और मेट्रो ट्रेन की शुरूआत हुई। इसके अलावा 'आवासीय कॉलोनी' की व्यवस्था भी बड़े ही सुनियोजित तरीके से हुई है। यहाँ भारत के अलग-अलग प्रदेशों के लोगों को, विभिन्न जातियों को एक साथ मिलकर प्रगतिशील सोच के साथ जीने का अवसर मिला।

रात के समय इस शहर का रूप और भी अनोखा दिखता है। बड़ी-बड़ी इमारतों की लाइटें, इतनी सुहावनी लगती हैं, किसी भी अन्य देश के विकसित शहर जैसे दुबई, न्यूयॉर्क से कम नहीं दिखाई देतीं। यह सब दर्शाता है कि जीवन में परिवहन, संचार, स्वच्छता, ताजी हवा, सुबह की सैर के लिए अच्छे पार्क तथा घूमने के कई स्थान, यह सब कितने महत्वपूर्ण हैं। ये सारी सुविधाएँ इस शहर में मौजूद हैं। आज मैं उस सेटलाइट शहर को छोड़कर अन्य शहर में जाकर रहने की कल्पना भी नहीं कर सकता। आज भी इन सबकी याद हरपल आती है।

थोड़े ही समय में जिस प्रकार इस शहर का कायाकल्प हुआ है, वह बहुत ही अकल्पनीय है। सूनेपन का स्थान चहल-पहल और भागदौड़ ने ले लिया है। विकास की नई परिभाषा गुरुग्राम की पहचान बन चुकी है। इस शहर ने भारत के विभिन्न राज्यों के युवाओं को अनेकानेक रोजगार ही नहीं बल्कि नए-नए सपने भी दिए हैं। यह परिवर्तन देखकर मुझे पूरा विश्वास है कि भारत का भविष्य उज्ज्वल है।

गर्व केडिया
कक्षा— बारहवीं

लालच का परिणाम

"अगर दूसरों के लिए बुरा सोचोगे, तो तुम्हारे साथ भी बुरा होगा।" यह वाक्य पढ़कर मुझे दो साल पुरानी बात याद आ गई। मेरी एक प्रिय सहेली थी, जिसका नाम रीना था। उसे बास्केटबॉल खेलना बहुत पसंद था। वह रेड हॉउस में थी और उस हॉउस की टीम में वह सबसे अच्छा खेलती थी। उसने सोचा था कि इस बार के 'इंटर हॉउस बास्केटबॉल मैच में उसे 'बेस्ट प्लेयर' का खिताब मिलेगा ही।

आखिर वह दिन आ ही गया। येलो हाउस की टीम और रेड हाउस की टीम एक दूसरे के विरुद्ध फाइनल मैच खेलने वाली थी। उस दिन पूरा स्कूल वह मैच देखने वाला था। सभी विद्यार्थियों में एक अलग ही उत्साह दिखाई दे रहा था। मैच शुरू हुआ। मैच एकदम रोमांचक होता जा रहा था। पहले दो मैच में दोनों टीमों के स्कोर एक बराबर थे। तीसरा मैच शुरू हुआ। येलो हाउस की टीम का स्कोर बढ़ता चला जा रहा था। अब ऐसा लग रहा था कि यही टीम जीतेगी। उस दिन मैंने रीना को खेलते हुए देखा, हर रोज जैसा जज्बा और लगन नहीं थी। उसे बेस्ट प्लेयर का खिताब चाहिए था और बेस्ट प्लेयर का खिताब जो टीम द्वितीय स्थान पर आती, उसी टीम में से एक खिलाड़ी को मिलता। वह चाहती तो अपनी टीम को जीत दिलवा सकती थी परंतु उसके लालच और अति आत्मविश्वास ने उसे रोक दिया। ब्रेक के समय मैंने उसे बहुत समझाया पर उसने मेरी एक न सुनी।

मैच खत्म हो गया। अब समय था मैच के परिणाम का। प्रधानाध्यापक ने कोर्ट में प्रवेश किया। उन्होंने जब बेस्ट प्लेयर का नाम पुकारा तब रीना के हाथ से उसका सामान गिर गया क्योंकि बेस्ट प्लेयर का खिताब उसे नहीं बल्कि उसकी टीम की एक साथी सिया को मिला। सिया नयी-नयी खिलाड़ी थी परंतु उस दिन जैसे उसने खेला वह देखकर सबके होश उड़ गए। किसी ने भी नहीं सोचा था कि वह इतना अच्छा खेलेगी। जबकि रीना जो इतने दिनों से खेल रही थी उसके लालच और अति आत्मविश्वास ने सब चूर-चूर कर दिया।

रीना पीछे मैदान में जाकर रोने लगी। मैंने उसे जाकर पीछे से एक झप्पी दी। उसके आँसू पोंछे और उसे समझाया कि यह एक खेल ही था और मैंने उससे कहा कि अगली बार और मेहनत एवं लगन से अभ्यास करना और फिर इंटर स्कूल में बेस्ट प्लेयर का खिताब जीतना।

मैंने एक बार चुप कराने के लिए तो उसे समझा दिया पर मन ही मन में यह चल रहा था कि अगर वह बेस्ट प्लेयर का खिताब जीतने के लिए लालच न करती तो उसकी टीम जीत जाती। कहीं न कहीं वही अपनी टीम की हार के लिए जिम्मेदार थी क्योंकि वह उस दिन अपनी टीम के लिए नहीं बल्कि अपने लिए खेल रही थी।

अनुष्का जितानी
कक्षा — ग्यारहवीं

अनोखी दुनिया

शहर की चीख-पुकार और भागदौड़ से दूर चाय के बागानों के बीच बसे भारत के इस प्रतिष्ठित विद्यालय दि असम वैली स्कूल का मैं एक अटूट हिस्सा हूँ। यहाँ का मनोहारी वातावरण, प्रतिस्पर्धात्मक शिक्षा व्यवस्था तथा खेलकूद के विविध आयाम किसी को भी अपनी ओर आकर्षित करने और जोड़कर रखने के लिए पर्याप्त हैं। मैंने भी इस विद्यालय में एक वर्ष पूर्व ही प्रवेश लिया है परंतु आज अपनी सहभागिता और विद्यालय के प्रति अपना समर्पण भाव देखकर मुझे यकीन ही नहीं होता कि मैं अभी हाल ही में इस विद्यालय से जुड़ा हूँ।

मैं अपने घर के वातावरण में पूरी तरह से निमग्न था। सभी के साथ रहना, घुलना-मिलना और समय के प्रति थोड़ी-सी असावधानी का परिणाम यह था कि मेरा शैक्षिक विकास सभी की इच्छाओं के अनुरूप नहीं हो पा रहा था। इस कारण घर के सभी सदस्यों ने मिलकर यह निर्णय किया कि मुझे किसी आवासीय विद्यालय का हिस्सा बना दिया जाए तो संभवतः मैं अपने कार्यों के प्रति अधिक ज़िम्मेदार बन सकूँ। घर का परिवेश हमेशा हमें बच्चा बने रहने पर मजबूर कर देता है क्योंकि बड़ों के संरक्षण में रहकर न तो हम बड़े हो पाते हैं और न ही होना चाहते हैं। सभी के विचारों को सम्मान देते हुए मैंने भी उनकी इच्छा के प्रति अपनी मौन सहमति दे दी। सहमत होने के बाद भी एक अजीब-सा डर मन में बैठा हुआ था कि किस प्रकार आवासीय विद्यालय में मैं अपने आपको स्थापित कर सकूँगा।

मैंने मन में प्रण किया कि चाहें जो कुछ भी हो लेकिन मैं चुनौतियों से डरकर नहीं भागूँगा। अनेक खोजबीन करने के बाद यह निर्णय लिया गया कि मुझे इसी विद्यालय में दाखिला दिला दिया जाए। अब मेरे ऊपर सारा भार आ चुका था। घर में रहने पर सभी लोग मेरा सहयोग करते, दिशा-निर्देश देते और सही-गलत के बारे में भी समझाते रहते थे लेकिन अब सभी निर्णय मेरे अपने थे। विद्यालय के शुरुआती दिनों में मैंने कुछ दिन बहुत ही दुखी और उदास होकर बिताए परंतु कभी भी अपने परिवार को इसके बारे में भनक भी न लगने दी। जैसे-जैसे समय बीता मित्र बने और कार्य की व्यस्तता ने अपने पाँव पसारे वैसे-वैसे घर की सारी स्मृतियाँ धूमिल पड़ने लगीं।

मैंने भी अपने मन में ठान लिया कि जिस विद्यालय का नाम और सुंदरता देखकर मैं इतना मोहित हो गया था, उसमें मुझे अपनी ऐसी पहचान बनानी है कि मेरे परिवार के लोग भी मुझ पर गर्व कर सकें। अब, मैंने अपने आपको पूरी तरह से विद्यालय के विविध विकासपरक क्रियाकलापों में संलग्न कर दिया है जिससे कि इन चुनौतियों का सामना करते हुए मैं एक निडर और साहसी इनसान बन सकूँ। मित्रों के अपार सहयोग और गुरुजनों के नियमित मार्गदर्शन ने मुझमें जिस ऊर्जा का संचार किया है, वह आगामी भविष्य में मेरे लिए बेहद लाभप्रद होगी। आज मेरी पहचान एक सच्चे एविएटर के रूप में बन चुकी है जो सभी चुनौतियों का निडरतापूर्वक सामना करते हुए अपने भविष्य निर्माण के लिए प्रयत्नशील है।

केशव सुल्तानियाँ
कक्षा — आठवीं

स्कूल से छुट्टी

आवासीय विद्यालय में हमेशा विद्यार्थी आने के बाद अगर किसी चीज़ का सबसे अधिक इंतज़ार करते हैं तो वे हैं छुट्टियाँ। यहाँ छुट्टी का आशय विद्यालय से हमेशा-हमेशा के लिए छुट्टी नहीं है बल्कि यहाँ छुट्टी का अर्थ वृहद अवकाशों में घर जाने से है। विद्यालय में अध्ययन-अध्यापन के दौरान अधिकांशतः हम लोग सतत् कार्यों में संलग्न रहते हैं और कभी-कभी काम का दबाव कम होने पर घर की याद सताने लगती है। तब ऐसा लगता है कि काश ! थोड़े दिनों की छुट्टियाँ हो जाएँ और हम लोग अपने परिवार के साथ कुछ दिन मिलजुल कर बिता सकें। यह भावना भी घर पर अधिक दिनों तक नहीं रहती क्योंकि घर में अधिक दिनों तक रहने के बाद ऐसा लगने लगता है कि जल्दी से विद्यालय खुले और हम लोग अपने दोस्तों से जाकर मिलें।

मैं अपने विचारों को किसी और दिशा में लेकर नहीं जाना चाहता बल्कि यह बताना चाहता हूँ कि घर पर जाने के बाद भी बहुत से लोगों का आचरण और व्यवहार बिल्कुल अलग-सा ही रहता है। मेरे एक मित्र ने मुझसे अपने भाव साझा करते हुए कहा कि मैं जब कभी लम्बी छुट्टियों में अपने घर जाता हूँ तो काफ़ी बोझिल-सा महसूस करता हूँ क्योंकि मेरे घर सभी लोग अपने-अपने कामों में व्यस्त रहते हैं। ऐसा लगता है कि किसी को मेरे यहाँ होने या न होने की परवाह ही नहीं है। मैंने जब उससे कहा कि कार्य तो सभी के लिए आवश्यक है और यदि कोई इनसान काम नहीं करेगा तो वह घर किस तरह से चलाएगा क्योंकि घर चलाने के लिए धनार्जन भी आवश्यक है। तब मेरे मित्र ने कहा कि जब परिवार के सभी लोग काम से लौटकर घर आते हैं तो सब अपने-अपने कमरों में जाकर थोड़ी देर आराम करते हैं और फिर अपना-अपना मोबाइल लेकर उसमें व्यस्त हो जाते हैं। मेरे पास बैठे होने पर भी उनका ध्यान मेरी ओर नहीं जाता।

इस घटना को सुनने के बाद मुझे लगा कि मैं बहुत ही भाग्यशाली हूँ क्योंकि मेरा पूरा परिवार मेरे घर पहुँचने पर बहुत ही खुश हो जाता है। सभी लोग मुझे घेर कर बैठ जाते हैं और मेरा हालचाल लेने लगते हैं। दादा-दादी भी हमेशा मेरे आने से पहले ही मेरा इंतजार करते रहते हैं। घर पर खाना भी मेरी ही पसंद का बनता है। पिताजी शाम को जब ऑफिस से घर आते हैं तो मेरे खाने के लिए मेरी मनपसंद चीज़ें लेकर आते हैं। शाम को सभी लोग दो घण्टे एक साथ मिलकर बैठते हैं और अपने पूरे दिन की चर्चा करते हैं। शाम का खाना सभी एक साथ मिलकर खाते हैं और यह नियम दादा जी का बनाया हुआ है कि परिवार के साथ बैठने पर कोई भी अपने मोबाइल फोन का इस्तेमाल नहीं करेगा। दादाजी कहते हैं कि आज अगर परिवारों के बीच लगाव कम हो रहा है तो इसका बहुत बड़ा कारण मोबाइल के प्रति लोगों का बढ़ता आकर्षण है। हम मोबाइल का प्रयोग तो करें लेकिन इसके गुलाम न बनें।

कृष्णम् अग्रवाल
कक्षा - आठवीं

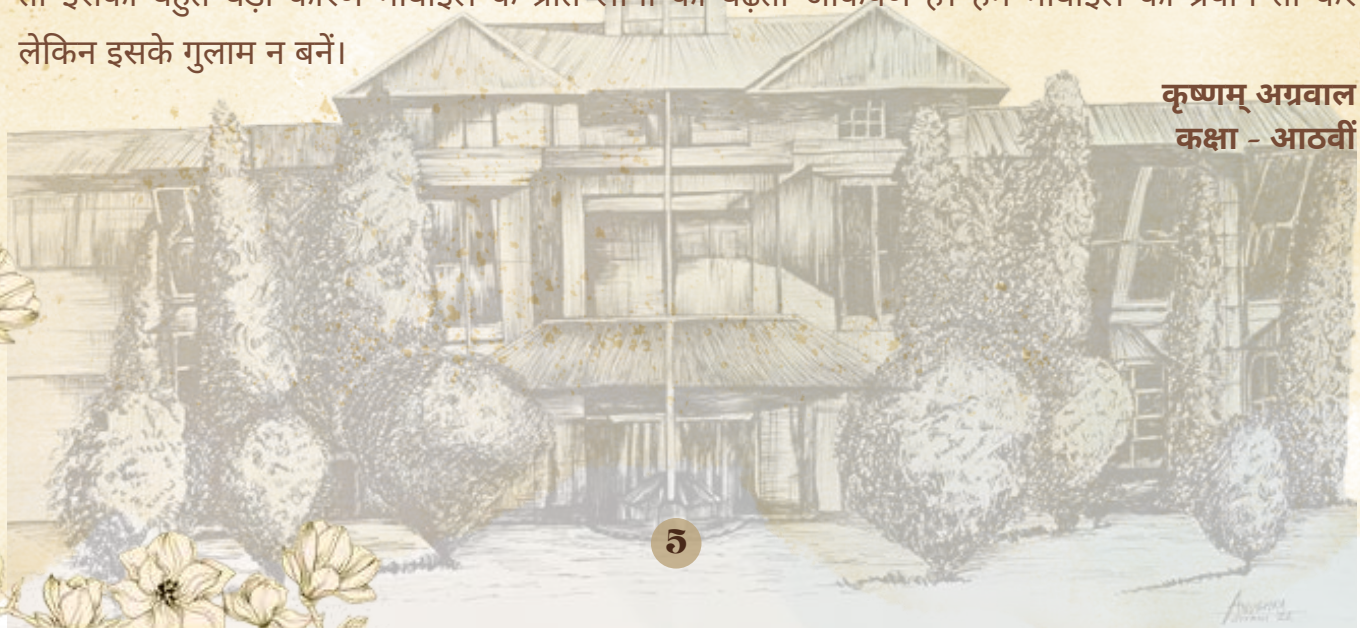

शरारती बंदर

किसी जंगल में एक शरारती बंदर रहता था। उसका नाम भोला था लेकिन उसके सभी गुण नाम के विपरीत थे। वह हमेशा जंगल के अन्य पशु-पक्षियों को परेशान करता रहता था। जंगल के सभी पशु-पक्षी उसकी शरारतों से तंग आ चुके थे। एक बार वह गौरैया के घोंसले पर चढ़ गया और उसमें रखे उसके अंडों को वहाँ से गिरा दिया। बेचारी गौरैया चीं-चीं करती रह गई। अगले दिन भोला एक चूहे के बिल के पास बैठा हुआ था कि इतने में चूहा रोटी का एक टुकड़ा कहीं से लाकर अपने बिल में बैठे बच्चों के लिए ले जा रहा था। इतने में भोला की नज़र उस रोटी के टुकड़े पर पड़ी और उसने दौड़कर चूहे से वह रोटी का टुकड़ा छीन लिया। बेचारा चूहा उदास होकर उसके सामने रोटी के टुकड़े के लिए गिड़गिड़ाने लगा लेकिन भोला का दिल नहीं पसीजा।

इसी प्रकार दिन-प्रतिदिन भोला की शरारतें बढ़ती गईं। एक दिन सभी जानवरों ने भोला की शिकायत हाथी दादा से की। हाथी दादा ने भोला को एक दिन अपने पास बुलाया और समझाया। हाथी दादा ने कहा, देखो भोला, सभी को तंग करना अच्छा नहीं है क्योंकि हमारी मुसीबत के समय हमारे अपने ही काम आते हैं और अगर तुम उन्हें इस तरह से परेशान करोगे, तो तुम्हारे दु:ख में कोई भी खड़ा नहीं होगा। भोला ने हाथी दादा का मज़ाक उड़ाते हुए कहा, मुझे किसी की मदद की ज़रूरत नहीं है क्योंकि मैं अपने सभी काम खुद कर सकता हूँ। हाथी दादा ने भोला को एक बार फिर चेताया और कहा, भोला, अंहकार हमेशा हमारे दु:खों का कारण बनता है। भोला वहाँ से सिर हिलाता हुआ घमंड में भरकर चल दिया।

अगले दिन जंगल में यह खबर आग की तरह फैल गई कि शहर से सरकस के कुछ कर्मचारी, जंगल में कुछ जानवरों को पकड़ने आ रहे हैं। सभी जानवर शिकारियों के इलाके से दूर चले गए। नन्हीं गिलहरी ने भोला को जब वहाँ घूमते हुए देखा तो उसे समझाया कि सभी लोग यहाँ से दूर चले गए हैं और तुम भी अगर बचना चाहते हो, तो चले जाओ। घमण्ड में भरे हुए भोला ने उसकी बातों पर ध्यान नहीं दिया।

थोड़ी दूर चलने पर उसे रास्ते में एक टोकरी में भरे हुए ताजे मौसमी फल दिखाई दिए। भोला तेजी से फलों की टोकरी की ओर दौड़ा। पास में खड़ी गिलहरी ने उसे रोककर समझाने की कोशिश करते हुए कहा, वहाँ मत जाओ, ज़रूर कुछ धोखा है। लेकिन भोला ने उसकी एक न सुनी और जैसे ही उसने टोकरी पर छलाँग लगाई वैसे ही वह टोकरी के साथ जुड़े शिकारी के फंदे में फँस गया। अब वह उससे निकलने के लिए तमाम कोशिशें करता रहा परंतु निकल न सका। रास्ते से गुजरते हुए अनेक जानवरों से उसने खुद को बचाने की मिन्नतें की परंतु किसी ने भी उसकी मदद न की। अंत में उसे लगने लगा कि अब शिकारियों के हाथ बंदी बनकर उसे हमेशा सरकस में ही काम करना पड़ेगा। गिलहरी को उसकी इस हालत पर दया आ गई। उसने पास में जाकर सावधानी से वह जाल काट दिया और भोला की मदद की। आज भोला को एहसास हो गया था कि जंगल के सभी जानवर उससे कितने दु:खी हैं। उसने प्रतिज्ञा की कि अब वह किसी को भी तंग नहीं करेगा। गिलहरी को उसने बार-बार अपनी मदद के लिए धन्यवाद दिया और अपने ठिकाने की ओर चला गया। आज भोला को दूसरों के प्रति अपने व्यवहार पर घृणा हो रही थी।

अनन्या यादव
कक्षा - आठवीं

सजा का डर

अंजलि एक धनी व्यक्ति के घर में नौकरानी का कार्य करती थी। लेकिन उसे खाना चुराने की बड़ी बुरी आदत थी। एक दिन उसका मालिक परिवार सहित कहीं बाहर गया हुआ था। अंजलि घर पर अकेली थी। उसने रसोई में जाकर फ्रिज खोला। पहले उसने फ्रिज से निकालकर जूस पिया और फिर मिठाइयाँ खाईं। उसने फल की टोकरी में दो केले देखे तो उन्हें भी खा लिया। तभी दरवाजे की घंटी बजी। अंजलि घंटी सुनकर डर गई कि उसके मालिक लौट आए हैं। वह समझ नहीं पा रही थी कि केले के छिलकों का क्या करे ? उसने सोचा, 'यदि मैं इन्हें छुपाने गई तो दरवाजा खोलने में देर हो जाएगी। यदि ऐसे ही दरवाजा खोलूँगी तो पकड़ी जाऊँगी।' इसलिए अंजलि ने केले के छिलके खा लिए और फिर दरवाजा खोला। दरवाजे पर पोस्टमैन था। वह एक पार्सल देने आया था। जब वह चला गया तो अंजलि ने सोचा, 'एक चोर को हमेशा पकड़े जाने का डर होता है। आज मुझे इस डर के कारण केले के छिलके भी खाने पड़े। आज के बाद मैं कभी भी चोरी नहीं करूँगी।'

सुरक्षा

एक बार एक गड़रिया अपनी भेड़ को खुला छोड़कर किसी काम से घर से बाहर चला गया। भेड़ अपनी आज़ादी का मजा ले रही थी। वह घर में यहाँ-वहाँ आज़ादी से घूमने लगी। पहले उसने रसोई में जाकर रोटी खाई। उसके बाद वह शयनकक्ष में गई और वहाँ पर लगे नर्म बिस्तर पर आराम करने लगी। फिर सीढ़ियाँ चढ़कर घर की छत पर पहुँच गई। वहाँ पर बह रही ठंडी हवा का आनंद लेते हुए वह बहुत अच्छा महसूस कर रही थी। अचानक उसने देखा कि घर के प्रवेश द्वार के बाहर खड़ा एक भेड़िया उसी की ओर घूर रहा है। प्रवेश द्वार बंद होने के कारण वह घर में प्रवेश नहीं कर पा रहा था। भेड़ उसे देखकर पहले तो डर गई। लेकिन जब उसे याद आया कि प्रवेश द्वार तो अंदर से बंद है, उसका डर काफूर हो गया और वह भेड़िए के ऊपर हँसने लगी। भेड़ को हँसते देखकर भेड़िया बोला, "प्रिय भेड़, आज तुम मुझ पर हँस रही हो, क्योंकि तुम एक ऊँचे स्थान पर सुरक्षित बैठी हो। यह तुम्हारा साहस नहीं बल्कि तुम्हारी सुरक्षा की भावना है, जिसके कारण तुम निडर होकर हँस रही हो।" यह कहकर वह वहाँ से चला गया।

शांभवी चौहान
कक्षा - आठवीं

चंद्रयान तीन

भारत ने अपनी अन्तरिक्ष की ताकत के माध्यम से यह सिद्ध कर दिया कि वह अपने दम पर विश्वशक्ति बनकर दिखा सकता है। चंद्रयान *3* की सफलता ने पूरे विश्व में भारत की साख बढ़ा दी है। भारत पूरी दुनिया में चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर पहुँचने वाला पहला देश बन गया। इस सफलता से पूरा देश गौरवान्वित हो गया। सभी ने देश के वैज्ञानिकों और सरकार को बधाई दी। चंद्रमा पर पहुँचे लैंडर ने विभिन्न प्रकार की तस्वीरें प्रेषित कीं। जिसकी मदद से वैज्ञानिकों को चंद्रमा के बारे में पता चल सकेगा। हम सभी लैंडर की मस्ती को इसरो द्वारा साझा की गई तस्वीरों और वीडियो में देख सकते हैं। चंद्रयान तीन का उद्देश्य चंद्रमा की सतह पर नई खोजें करना है। रोवर इस मिशन का मुख्य हिस्सा है। जिसका उद्देश्य चंद्रमा की सतह पर गहरी खुदाई करना है। जिससे अध्ययन में सहायता मिल सके। लैंडर रोवर को सुरक्षित ढंग से चंद्रमा की सतह पर उतारने के कार्य में सफल रहा। इस अभियान में चंद्रमा की सतह से खनिज और ऊर्जा स्रोतों की खोज की जाएगी। इसमें ऑक्सीजन का स्तर, जलवायु का अध्ययन, जल की उपलब्धता एवं हीलियम की खोज भी शामिल है। उपरोक्त खोजों के आधार पर इस रहस्यमय ग्रह के बारे में पता चल सकेगा। इससे हम नई जानकारी प्राप्त कर सकते हैं जो विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में नए अवसरों को खोल सकता है।

यशप्रीत कौर
कक्षा - नवमीं

काव्य-खण्ड

कवि और कविताएँ

हिया केशन
कक्षा — बारहवीं

शायद, वह कुछ कहना चाहता था,
लेकिन कहने में हिचकिचाता था।
हृदय की वेदना को,
मन के भाव को,
पीड़ा के राग को,
शब्दों में पिरोया तो
कविता उभर गई,
ओज भरी वाणी बनकर बह गई।
शायद, वह कुछ और समझाना चाहता था,
अपने हृदय की पीड़ा, दिखाना चाहता था।
प्रेम की वह परिभाषा,
नफ़रत में बह गई,
लोगों की नसों में उतर गई,
रस और छन्दों की वह वैतरणी
मानस-पटल पर जम गई।
कविता का जन्म हृदय की झंकार है,
भावनाओं का उठता हुआ गुबार है।
कवि भावों को पिरोता,
लयात्मकता को संजोता,
मानस-पटल पर अमित छाप छोड़ता
लोगों के भावों को उद्वेलित कर गई,
कवि की भावना कविता में उतर गई।

रंग-बिरंगी दुनिया

अनुष्का अय्यर
कक्षा — छठवीं

ऐसी दुनिया की हसरत है
जहाँ रंगों की बौछार हो,
आसमान नीला हो और
प्रेम की फुहार हो।
रोशनी से भरा संसार हो
लोगों में ऊर्जा अपार हो,
सभी को सभी से प्यार हो
आपस में न कोई तकरार हो।
धरती पर समय से बारिश हो
शीतल-स्वच्छ वायु का संचार हो,
खेतों में फैली हरियाली हो
किसानों के चेहरों पर मुस्कान हो।
शहरों में फैला प्रदूषण दूर हो
सबके घर खुशियाँ भरपूर हों,
किसी को न किसी से डर हो
हर इंसान पूरी तरह बेफ़िकर हो।

पहेलियाँ

- मैं हरी, मेरे बच्चे काले, मुझे छोड़, मेरे बच्चे खा ले।
- मैं मरूँ, मैं कटूँ पर तुम क्यों रोए।
- घुसा आँख में मेरे धागा, मैं दर्जी के घर से भागा।
- ऐसी कौन-सी सब्जी है, जिसमें ताला और चाबी दोनों आते हैं।
- रंग है मेरा काला, उजियारे में दिख जाती हूँ।
  अँधेरा हो जाने पर, मैं नज़र न आती हूँ।।

शांभवी चौहान
कक्षा — आठवीं

कामयाब

ध्रुव पृथानी
कक्षा — दसवीं

बुरा समय भी आने पर
जो कभी न हिम्मत खोते हैं,
लगातार कोशिश करने पर
सफल वही जन होते हैं।
बाधाओं से जो डर कर
जो बीच राह रूक जाते हैं,
लाख यत्न करने पर भी
वे कभी न मंज़िल पाते हैं।
लोगों की परवाह न करके
जो निज मार्ग बनाते हैं,
पाते हैं वे सदा सफलता
कर्मवीर कहलाते हैं।
जो दिन-रात जुटे कामों में
मन का चैन वही पाते हैं,
सोते हैं वे नींद चैन की
दुनिया को स्वर्ग बनाते हैं।
कुछ होते हैं कामचोर
जो रोज बहाना करते हैं,
ऐसे ही जन सदा धरा पर
दुःख का कारण बनते हैं।

फूलों की दुनिया

सौम्या अग्रवाल
कक्षा - बारहवीं

फूलों के गुच्छे बड़े ही मासूम होते हैं,
धूप और बारिश से लड़कर मज़बूत होते हैं।
सुगंध बिखेरना उनका स्वभाव होता है,
फूलों का हर एक रंग बहुत लाज़बाव होता है।
तितलियाँ फूलों पर अपना प्यार लुटाती हैं,
फूलों की खुशबू से खिंची चली आती हैं।
भौंरों को भी फूल बड़े प्यार से बुलाते हैं,
अपने मीठे शहद से उनकी भूख मिटाते हैं।
कितनों के घर, कितने परिवारों को चलाते हैं,
अपना बलिदान देकर फूल सदा मुसकुराते हैं।
फूलों की बगिया सदा मन को लुभाती है,
राह चलते पथिक को शीतलता पहुँचाती है।

सारथी

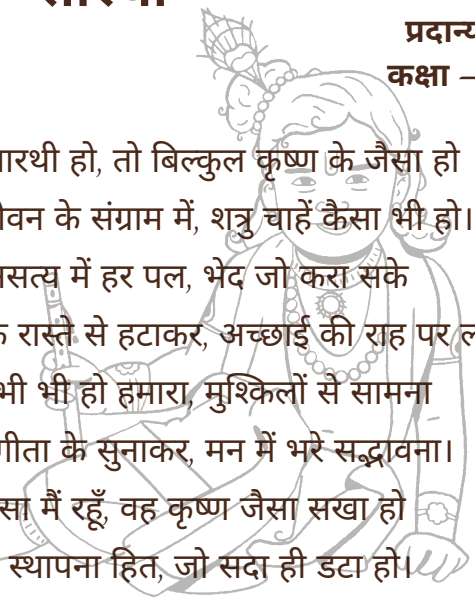

प्रदान्या कश्यप
कक्षा — आठवीं

अगर सारथी हो, तो बिल्कुल कृष्ण के जैसा हो
फिर जीवन के संग्राम में, शत्रु चाहें कैसा भी हो।
सत्य-असत्य में हर पल, भेद जो करा सके
बुराई के रास्ते से हटाकर, अच्छाई की राह पर ला सके।
जब कभी भी हो हमारा, मुश्किलों से सामना
श्लोक गीता के सुनाकर, मन में भरे सद्भावना।
पार्थ जैसा मैं रहूँ, वह कृष्ण जैसा सखा हो
धर्म की स्थापना हित, जो सदा ही डटा हो।

मेरा भाई

कृष्णम् अग्रवाल
कक्षा — आठवीं

मेरा भाई सदा ही, मेरा साथ निभाता है
उसके बिना कहीं भी मुझको, चैन न आता है,
कुछ भी काम करने पर वह, उत्साह बढ़ाता है
मुश्किलों से सदा वह, मुझे लड़ना सिखाता है।
मेरा बड़ा भाई, हम सब लोगों का सहारा है
हम सब अगर किश्ती हैं, तो वह सबका किनारा है,
मेरे रूठ जाने पर सदा, वही मुझे मनाता है
टूटती हुई हिम्मत हमेशा, वह सदा ही बढ़ाता है।
मैं भी उसके स्नेह का, पूरा सम्मान करता हूँ
मैं भी उसकी बातों का, हमेशा मान रखता हूँ,
उसमें मुझे अपना हमेशा, आदर्श नज़र आता है
जब भी उससे मिलूँ तो, अपने आप प्यार उमड़ आता है।

वर्षा की बूँदें

तनिष्का शर्मा
कक्षा — बारहवीं

बादलों के बरसने से
मन आह्लादित हो जाता है,
धरती का मटमैला स्वरूप
हरा-भरा हो जाता है।

किसान अपने खेतों में
फसल रोपने लग जाते हैं,
ताल-तलैयों के पानी से
जीव-जंतु अपनी प्यास बुझाते हैं।

बागों में कोयलें कूँकने लगती हैं
पेड़ों पर नवीन कोपलें फूटने लगती हैं,
फूलों की खिली क्यारियाँ देख
मालिनें गुनगुनाने लगती हैं।

वर्षा के आ जाने से धरती पर
एक रौनक-सी छा जाती है,
बच्चों की किलकारियों से
घर की बगिया चहक जाती है।

घर पर बैठी माताओं का हाल
अलग-सा हो जाता है,
चाय-पकौड़ों की फ़रमाईश में
पूरा दिन निकल जाता है।

वर्षा बहार सभी के मन को
खुशियों से भर जाती है,
प्यास से बेचैन धरती की
अकुलाहट को मिटा जाती है।

सरकस की यात्रा

अर्पित यादव
कक्षा — पाँचवीं

एक दिवस सरकस जाने का
मैंने अपना प्लान बनाया,
मौका देख पिता से बोला
जमकर रोया और रिरियाया।

लेकिन इतना रोने पर भी
बिल्कुल उनका दिल न पिघला,
मैंने मन में ठान लिया था
मुझको लेना है अब बदला।

बिना बताए मैं चल बैठा
सरकस का वह खेल देखने,
भीड़-भाड़ में मैं जा पहुँचा
अपनी इच्छा पूरी करने।

तभी वहाँ पर शोर जोर का
मुझको पड़ने लगा सुनाई,
शेर निकल भागा पिंजड़े से
मुझे लगा अब आफ़त आई।

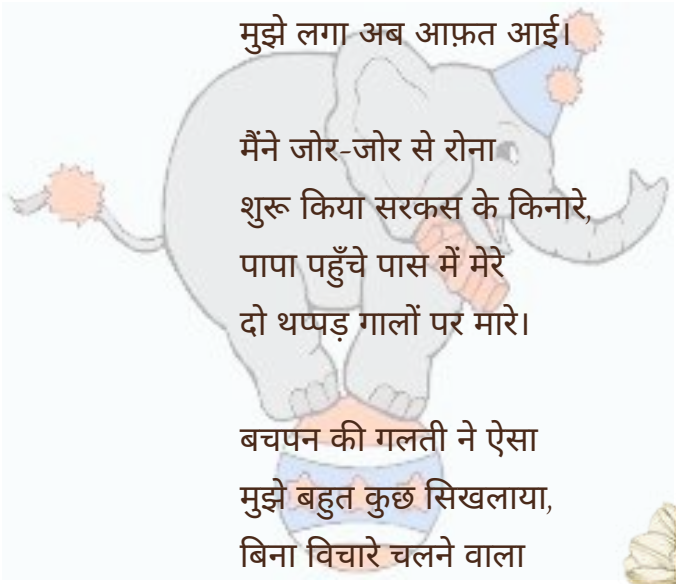

मैंने जोर-जोर से रोना
शुरू किया सरकस के किनारे,
पापा पहुँचे पास में मेरे
दो थप्पड़ गालों पर मारे।

बचपन की गलती ने ऐसा
मुझे बहुत कुछ सिखलाया,
बिना विचारे चलने वाला
हरदम ही है पछताया।

बारिश

अनन्या यादव
कक्षा – आठवीं

झम-झम, झम-झम पानी गिरता
उसे देख सबका मन खिलता।
पानी गिरता झम-झम, झम- झम
उसमें नाचें छम-छम, छम-छम।
आकाश में गरज कर तुम
जब धरती पर आ जाते हो,
मन की करूणा को छूकर,
हर मन में तुम बस जाते हो।
जीवन में भरकर सुख,
तुम दुनिया में छा जाओ।
अपनी प्रेम की बारिश से
तुम सबकी प्यास बुझाओ।

ऐसी होती है माँ

आरोही अग्रवाल
कक्षा - नवमीं

खून से नौ महीने तक सींचकर,
हमें इस दुनिया में लाती है माँ।
बच्चा हँसे, तो हँसती है,
रोने पर, रो जाती है माँ।
पापा की डाँट पड़ने पर,
कोने में ले जाकर समझाती है माँ।
अपने बच्चों की, सुरक्षा की खातिर,
हर खतरे से, टकरा जाती है माँ।
कभी गुस्सा भी हमसे हो तो,
बड़े प्यार से समझाती है माँ।
हमारे दर्दों को अपने आँचल में छिपाकर,
बड़ी चतुराई से मुस्कुराती है माँ।

पेड़ लगाओ

शुभम माहेश्वरी
कक्षा – दसवीं

पेड़ लगाओ, पेड़ लगाओ
अपनी धरा को स्वच्छ बनाओ।
आओ पर्यावरण दिवस मनाएँ,
मौका मिले तो पेड़ लगाएँ।
इनका करें हम पालन-पोषण,
बंद करें अब इनका शोषण।
जब तक धरती स्वच्छ रहेगी,
वायु भी अपनी शुद्ध रहेगी।
पेड़-पौधों पर होगी हरियाली,
खुश दिखेगा हर एक माली।
बागवानी का लाभ मिलेगा,
हर व्यक्ति खुशहाल दिखेगा।
प्रकृति से जुड़कर पर्व मनाएँ,
इस धरती को स्वर्ग बनाएँ।

माँ

निकुंज नारायण बजाज
कक्षा - नवमीं

माँ, तेरे लिए क्या कहूँ ?
तू है ममता की मूरत।
सुबह न तेरे दर्शन होते,
नहीं झलकती खुशी की सूरत॥

माँ, तूने जो भी किया मेरे लिए
वो ऋण कैसे चुकाऊँगा।
सात जनम ले लूँ तब भी,
तेरे जैसा प्यार न पाऊँगा॥

माँ, तेरी दी हुई सीख से
चलता रहूँ हरदम,
मुझे पता है मेरी माँ
तू नहीं है किसी से कम॥

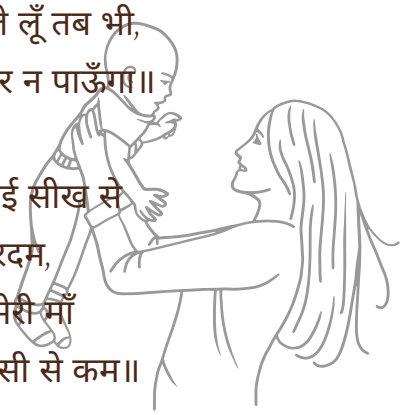

नमन है तुम्हें !

अनुष्का जितानी
कक्षा – ग्यारहवीं

दूर दराज उस सरहद पर
खड़े उन जवानों को करते हैं नमन,
जिन्होंने न जाने बचाया कितनी बार
इस देश को पहनने से हार का कफ़न

जब पूछा, छोड़ा तुमने क्यों अपना घर ?
क्या परिवार का ख्याल न आया तुम्हारे अन्दर
तो बड़े गर्व से कहते हैं
मैं हूँ भारत माँ का लाल !
खड़ा हूँ करने रक्षा को हर हाल
नमन है उन महान जवानों को
नमन है उन शूरवीरों को।

मैं हूँ एक डाकिया और लाया पैगाम
उन वीर जवानों के नाम,
देने अपनों को संदेश उस शाम
नमन है तुम्हें और तुम्हारी कुर्बानियों को,
नमन है तुम्हारे वीर कारनामों को
कभी पवन की बस्ती में,
कभी रेत की हस्ती में,
तो कभी लहरों की कश्ती में,
सोचता हूँ, कैसी है ये जुनूनियत
भर दी जिसने है तुममें इतनी रूहानियत।

कैसे जी लेते हो, उस माहौल में ?
कैसे लेते हो साँस, उन हवाओं में ?
क्या नहीं घुटता है तुम्हारा दम ?
क्या नहीं करता है भाग जाने का मन ?
तुममें छिपा है साहस का अपार धन

तभी तो हंगामा जब था छाया,
दहशतगर्दों ने था जब, हुड़दंग मचाया,
छाया जब था दुश्मनों का कहर,
मुरझाया था तब, हर शख्स उस शहर
तब भी तुम्हीं ने अपनी वीरता दिखाई,
बँटवाई थी तुमने, हर घर जीत की मिठाई।

मुझ जैसे एक मामूली डाकिये को
उस फौलादी जवान ने दिया, एक अनूठा जबाव,
जिसने भरा मुझमें, मातृभूमि के प्रति अपार भाव,
कर्ज़ है मुझ पर इसका बड़ा
जीवन हमारा है इसके कर्ज़ से भरा
अब न मैं झुकूँगा, न किसी से डरूँगा
हर हाल में देश-रक्षा के लिए लड़ूँगा।
यह ज़िंदगी मेरी है, वतन के नाम
इस पर कुर्बान, मेरे सुबह और शाम।

रोचक तथ्य !

- **वैज्ञानिक आज तक नहीं जान पाए हैं कि डायनासोर का रंग कैसा था।**
- **शुक्र ग्रह पर एक दिन पृथ्वी के एक साल से बड़ा होता है**
- **बारिश के पानी में *B12* होता है, जो हमारे लिए काफी लाभदायक है।**
- **वायु चलती है, तो आवाज़ नहीं करती। वह आवाज़ तब करती है, जब किसी वस्तु से टकराती है।**
- **चाँद पर बने निशान वहाँ पर वायुमण्डल न होने के कारण *100* मिलियन वर्षों तक रहते हैं।**
- **बतख कभी भी बिना सिर हिलाए नहीं चल पाती है।**
- **काँच के सड़ने में *4000* वर्ष लगते हैं।**
- **प्लास्टिक सड़ने में *450* वर्षों का समय लेता है।**
- **नींद में हमें गंध का पता नहीं चलता।**

विभागीय गतिविधियाँ: हिंदी विभाग

व्यक्तिगत हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता

आई. पी. एस. सी. हिंदी नाटक विजेता टीम

सीनियर वर्ग अंतर-सदनीय हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता

सीनियर वर्ग अंतर-सदनीय हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता

हिंदी नाटक प्रस्तुति - यमराज का दरबार

हिंदी नाटक प्रस्तुति - यमराज का दरबार

छूकर मेरे मन को.....

असम के गोलाघाट शहर में मैंने अपने जीवन के प्रारंभिक वर्ष बिताए। मैंने कक्षा छः तक की पढ़ाई नुमालीगढ़ में स्थित दिवसीय विद्यालय दिल्ली पब्लिक स्कूल से की। वहाँ मेरा जीवन सामान्य गति से चलायमान था और मैं अपनी दिनचर्या से पूर्णतया संतुष्ट भी था। भाग्य ने मेरे लिए कुछ और ही सोच रखा था जो कि मेरी शिक्षा और जीवन की दिशा हर किसी में एक व्यापक परिवर्तन लाने वाला था।

एक दिन मेरे पिताजी की नज़र दि असम वैली स्कूल के एक विज्ञापन पर पड़ी, जो भारत का एक प्रतिष्ठित बोर्डिंग स्कूल है। यह स्कूल अपनी अकादमिक उत्कृष्टता और विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए देश भर में प्रसिद्ध है। एक व्यापक शैक्षिक अनुभव की संभावना से प्रेरित होकर उन्होंने मेरे लिए शैक्षिक विकल्प तलाशने का फैसला किया। व्यापक शोध और विद्यालय के कर्मचारियों तथा परिचितों के साथ चर्चा करने के उपरान्त उन्होंने मेरे सामने कक्षा सातवीं से दि असम वैली स्कूल में पढ़ने का प्रस्ताव रखा। मैं अचानक आए ऐसे प्रस्ताव से हतप्रभ था, तब उन्होंने मेरे सामने अपने किए गए समस्त प्रयासों के विषय में विस्तार से चर्चा की।

एक दिवसीय स्कूल से प्रतिष्ठित बोर्डिंग स्कूल का सफ़र मेरे लिए उत्साहजनक और चुनौतीपूर्ण था। दि असम वैली स्कूल का परिसर विशाल और सुरम्य था, जो हरी-भरी हरियाली के बीच बसा हुआ था। विद्यार्थियों के बीच का सौहार्द्र और शिक्षकों के साथ हार्दिक संबंध अपने आप में किसी अनूठी कल्पना से कम नहीं थे। सातवीं में प्रवेश लेने के उपरांत दि असम वैली स्कूल का यह अनुभव अकल्पनीय था। विद्यालय के दैनिक कार्यक्रमों ने मुझमें अनुशासन पैदा किया जिससे मुझे अपना समय कुशलतापूर्वक प्रबंधित करने में बेहद मदद मिली। बोर्डिंग स्कूल के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण लाभ शिक्षाविदों के साथ निरंतर वार्तालाप और मार्गदर्शन होता है।

विद्यालय के संयमित वातावरण ने मुझे शैक्षिक गतिविधियों की ओर बेहद आकर्षित किया। शिक्षा के प्रति पूर्ण समर्पण ने मुझे शैक्षिक उत्कृष्टता प्रदान की। खेल के मैदान से लेकर रचनात्मक गतिविधियों ने मेरे सर्वांगीण विकास में अपना असीम योगदान दिया। सीनियर साथियों की मदद से मैंने अपने जीवन को संतुलित करने की सीख प्राप्त की। खेलकूद के साथ-साथ मेरा रुझान सामाजिक सेवा के कार्यक्रमों की ओर भी हुआ जिससे मेरे व्यक्तित्व में विचित्र सौंदर्य स्थापित होने लगा।

बारहवीं कक्षा में पहुँचने के बाद मुझे स्वयं एहसास होने लगा कि एक इनसान के रूप में मैं कितना विकसित हो चुका हूँ। जीवन में झिझकने वाले एक बाल विद्यार्थी से लेकर दुनिया का निडरतापूर्वक सामना करने वाले एक नवयुवक होने तक मेरा सफ़र बहुत ही रोमांचकारी और चुनौतीपूर्ण रहा है। आज मैं इवेंट मैनेजमेंट हेड के रूप में कार्य कर रहा हूँ और बहुत ही सरलतापूर्वक अपनी ज़िम्मेदारियों का निर्वहन कर लेता हूँ, यह सारा आत्मविश्वास विद्यालय के सहयोग और शिक्षा का ही परिणाम है। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी यह विद्यालय इसी प्रकार संतुष्ट एवं ज़िम्मेदार नागरिक तैयार करने में अपना योगदान देता रहेगा।

हिमानिश जालान (इवेंट मैंनेजमेंट हेड)
कक्षा — बारहवीं

"सौम्य, कृतज्ञतापूर्ण, परिश्रमी, सहयोगी एवं समाजसेवी विद्यार्थी जिसने अपनी मेहनत से लोगों के बीच एक आदर्श प्रस्तुत किया।"
-डॉ. राजेश कुमार मिश्र, हिंदी अध्यापक

दि असम वैली स्कूल में मैंने कक्षा आठवीं में प्रवेश लिया। मेरे शुरूआती दिन उत्साह और चिंताओं से परिपूर्ण थे। विद्यालय का विशाल परिसर भी मेरे लिए डरावना था। मेरे साथ प्रवेश लेने वाले नवागंतुकों ने साथ मिलकर मेरी चिंताओं और जिज्ञासाओं को शांत किया। मुझे अपने पहले दिन जो सबसे अच्छा लगा, वह था कि हमारे वरिष्ठ साथी हम सभी नवागंतुकों का स्वागत कर रहे थे। मेरे सहयोगी साथी ने जल्दी ही विद्यालय के नियमों एवं दिनचर्या से मेरा परिचय करा दिया। मैंने भी शीघ्रता से विद्यालय की रोज़मर्रा ज़िंदगी के साथ अपने आपको समायोजित करने का कार्य शुरू कर दिया। विद्यालय ने मुझे दोस्ती का ऐसा पाठ पढ़ाया जो आगामी जीवन में हमेशा मेरे साथ रहेगा। यहाँ आकर मैंने घनिष्ठ मित्रता का महत्त्व समझा और उसे अपने जीवन में उतारा।

कक्षा नवमीं में पहुँचने के बाद मैंने शिक्षा के साथ-साथ पाठ्येत्तर गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता करनी शुरू कर दी। इन गतिविधियों ने न केवल मुझे रोमांचित किया बल्कि मेरी रुचियों से भी मुझे परिचित कराया। जीवन के सही मूल्य की अवधारणा का भी परिचय मेरा पाठ्येत्तर गतिविधियों से ही हुआ। समूह भावना का विकास और नेतृत्व कौशल का ज्ञान भी विद्यालय की रचनात्मक गतिविधियों से ही होता है।

कक्षा दसवीं में पहुँचने पर विद्यालयीय गतिविधियों के साथ-साथ शिक्षा का दबाव भी बढ़ जाता है। इस अवसर पर विद्यालय के साथी एवं मेरे अध्यापकों ने मेरी भरसक मदद की। जिन विषयों को लेकर मेरे मन में सदैव चिंता का भाव बना रहता था, उन विषयों को समझने और सरलता से ग्रहण करने में मेरे मित्रों और मेरे विषयाध्यापकों ने मेरी भरसक सहायता की। कोरोना काल की चुनौतियों का सामना करने के साथ-साथ शैक्षिक विकास भी मेरे जीवन के लिए परमावश्यक था और इस कठिन घड़ी को मैंने अपने साथियों और शिक्षकों की मदद से बहुत ही सरलता से निपट लिया। बोर्ड परीक्षा में भी मेरा शैक्षिक प्रदर्शन आशा के अनुरूप रहा।

कक्षा ग्यारहवीं में सबसे बड़ी चुनौती सही संकाय और विषयों का चयन करना था क्योंकि यही चयन हमारे शेष भविष्य की सफलता का निर्धारण करता है। अपने माता-पिता, गुरुजनों एवं साथियों की सलाह पर मैंने विज्ञान संकाय का चयन किया और अपने सुनहरे भविष्य की ओर कदम बढ़ा दिए। कक्षा बारहवीं में विद्यालय ने मुझे इवेंट मैनेजमेंट टीम का हिस्सा बना दिया। आज मैं विद्यालय की समस्त गतिविधियों एवं सामाजिक सेवा के कार्यों में अपने आपको समर्पित करने के साथ-साथ भविष्य के लिए अपने प्रगति-पथ को प्रशस्त करने के लिए भी कटिबद्ध हूँ। मेरे समर्पण और साथियों के सहयोग ने सदैव मेरे विकास मार्ग को आलोकित किया है। मैं आशा करता हूँ कि आज विद्यालय की सीख ने मुझे एक बेहद ज़िम्मेदार नागरिक के रूप में आगामी भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार कर दिया है जिससे मैं समाज के प्रति सद्भावना और अपने कर्त्तव्यों के प्रति सजग रहकर स्वयं के साथ-साथ सामाजिक चेतना के दीपक को भी प्रज्ज्वलित रख सकूँ।

क्रिशिव कलिता (ई. एम. प्रीफेक्ट)
कक्षा - बारहवीं

"शांत चित्त, भावुक, चिंतनशील, उदार, अनुशासित, अन्वेषक, सुशील, हँसमुख-विनोदी, आज्ञाकारी, सहयोगी प्रवृत्ति, निष्ठावान, चरित्रवान एवं विवेकशील विद्यार्थी।"
-श्रीमान प्रेम कुमार सिंह, हिंदी अध्यापक

असम वैली स्कूल में मेरी यात्रा कक्षा 5 से शुरू हुई, जब मैं मानस हाउस में शामिल हुआ। जिस क्षण मैंने दरवाज़े से बाहर कदम रखा, मुझे ऐसा लगा कि जैसे मुझे घर से दूर एक घर मिल गया हो। मेरे शिक्षकों और सहपाठियों ने गर्मजोशी से स्वागत किया और हरे-भरे परिसर और स्कूल के जीवंत माहौल ने मुझे सहज महसूस कराया।

इन वर्षों में, एवीएस ने मुझे शिक्षा के अलावा और भी बहुत कुछ दिया है। इसने मुझे जीवन जीने के अनेक सबक सिखाए हैं, मेरे जुनून को खोजने में मदद की है और मुझे वह व्यक्ति बनाया है, जो मैं आज हूँ। मुझे कई प्रकार के खेलों और पाठ्य-सहगामी गतिविधियों में भाग लेने का अवसर मिला है, जिससे मुझे अपने कौशल और प्रतिभा को विकसित करने में मदद मिली है। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण चीज़ जो एवीएस ने मुझे दी है, वह है यहाँ बनाई गई मेरी मित्रता।

मैं अब 12वीं कक्षा में हूँ और असम वैली स्कूल को अंतिम अलविदा कहने से पहले मेरे पास बस कुछ ही महीने बचे हैं, वह स्थान जिसे मैं पिछले सात वर्षों से अपना घर मानता हूँ। यह जानना एक कड़वी-मीठी अनुभूति है कि यहाँ मेरा समय समाप्त हो रहा है, लेकिन मैं यहाँ बनाई गई अनगिनत यादों और दोस्ती के लिए आभारी हूँ, ये सब हमेशा मेरे साथ रहेंगे।

मैंने एवीएस में जो समय बिताया उसके लिए मैं आभारी हूँ। यह वास्तव में एक परिवर्तनकारी यात्रा रही है और मैंने यहाँ जो सबक सीखा है, उसे मैं जीवन भर अपने साथ रखूँगा। हर चीज़ के लिए धन्यवाद, एवीएस।

सुजानवीर आतरिया, (कप्तान, मानस सदन)
कक्षा - बारहवीं

जैसे ही इस स्कूल में मेरी यात्रा पाँच वर्षों के बाद समाप्त होती है, मेरा दिल स्नातक होने के बाद के जीवन के बारे में उत्साह और घबराहट के मिश्रण से अभिभूत हो जाता है। यह स्कूल मेरा अभयारण्य, मेरा दूसरा घर, एक ऐसी जगह रहा है जिस पर मैं हमेशा भरोसा कर सकती हूँ। आज मैं जो भी हूँ, उसे आकार देने में इसने एक अभिन्न भूमिका निभाई है और चाहे मैं कितनी भी कोशिश कर लूँ, एवीएस ने मुझे जो कुछ दिया है, उसका बदला मैं कभी नहीं चुका सकती।

समर्पित शिक्षक, मेरे सहायक जूनियर, मेरे अद्भुत बैचमेट और विशेष रूप से मेरे प्रेरक वरिष्ठ सभी ने मेरे अविकसित और कच्चे व्यक्तित्व को निखारने में अपना असीम योगदान दिया है। मंच मेरा स्वर्ग रहा है, एक ऐसी जगह जहाँ मैंने हर्षित हँसी से लेकर हार्दिक आँसू तक, भावुक नृत्य से लेकर भावपूर्ण गायन तक, और हाँ, यहाँ तक कि गहरी शर्मिंदगी के क्षणों तक, सब कुछ अनुभव किया है।

मैंने जितना भी सोचा था, यहाँ उससे कहीं अधिक अवसर मिले हैं और मैं इस शानदार और समृद्ध संस्थान का हिस्सा बनने के लिए वास्तव में इसकी हृदय से आभारी हूँ। मुझे यह जानकर दुख हुआ कि यह जागरण पत्रिका में मेरा अंतिम योगदान होगा, जो मेरे जीवन के एक अविस्मरणीय अध्याय का अंत होगा।

मैं अपने स्कूल और उन सभी लोगों के लिए शुभकामनाएँ देती हूँ जो इसका हिस्सा बने रहेंगे। दृढ़ता के माध्यम से प्रेरणा पाने की स्थायी विरासत फलती-फूलती रहे और लोगों को सरल सुखों में गहरा आनंद मिलता रहे। अपने जूनियरों को गर्व से अपने स्कूल की टी-शर्ट पहने हुए सदन की जय-जयकार करते हुए देखना बेहद सुखद होता है। एवीएटर की भावनाओं का ज्वार तब उठता है, जब पूरा स्कूल एक साथ 'पास इट ऑन' गाते हुए गीत में एकजुट हो जाता है।

ओजस्वी अग्रवाल (हाउस प्रीफेक्ट, जिनारी सदन)
कक्षा - बारहवीं

मैंने दि असम वैली स्कूल में कक्षा नवमीं में प्रवेश लिया। पहली बार स्कूल आते समय जैसे ही मेरी कार ने खेलमाटी से स्कूल की ओर मोड़ लिया तो चाय बागानों की सुंदर हरियाली से ही मैं मोहित हो गई। पहले दिन मैं थोड़ी-सी घबरायी हुई अवश्य थी परंतु यहाँ के लोगों की आत्मीयता और विद्यालय के सुंदर परिसर ने जल्दी ही मेरा मन जीत लिया। आज मुझे इस विद्यालय में आए हुए चार वर्ष बीत चुके हैं और मैं इतने समय में एक परिपक्व व्यक्तित्व बन चुकी हूँ। आज मैं जो भी और जैसी भी हूँ, उसमें मेरे विद्यालय की एक अहम भूमिका है। विद्यालय ने मुझे शिक्षा, संस्कृति, कला, चित्रकला एवं फोटोग्राफी समेत अनेक क्षेत्रों में निपुणता प्रदान की है।

इस विद्यालय ने केवल मुझे विषयपरक शिक्षा ही प्रदान नहीं की बल्कि जीवन पर्यन्त साथ निभाने वाले मित्र भी दिए हैं। अध्यापकों, सहपाठियों और कनिष्ठ साथियों के साथ निर्मित मेरा संबंध आजीवन मेरे हृदय में अपना स्थान रखेगा। मैं अपने माता-पिता को भी धन्यवाद देना चाहूँगी जिन्होंने मुझे इस विद्यालय में भेजकर मेरे जीवन में यह आकर्षक अध्याय जोड़ा। जब मैं इस विद्यालय से विदा लेने वाली हूँ, तो मुझे निश्चित ही अपने मित्रों के साथ डायनिंग हॉल में बैठकर भोजन करना और बातें करना हमेशा याद रहेगा। भारतीय संगीत की कक्षाएँ, प्रार्थना सभाएँ और विद्यालयीय गतिविधियों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने की याद सदैव ही मेरे हृदय में रहेगी। मैं विद्यालय के सहयोग के लिए हमेशा आभारी रहूँगी।

अवन्या जसरासरिया (कैप्टन, इण्डियन क्वायर)
कक्षा — बारहवीं

बूझो तो जानें ?

ए. वी. एस. से संबंधित संक्षेपाक्षरों के पूर्ण नाम का पता लगाइए :

1. ए. वी. आर.

2. एम. एस. बी.

3. बी. सी. डी. एच.

4. एस. सी. आर.

5. आई. सी. टी.

6. सी. डी. टी.

नीचे दिए गए चित्रों में दस अंतर खोजिए :

देखो हँस न देना

रमेश ने शौक-शौक में व्रत रख लिया।
रमेश (पत्नी से) — देखो सूरज डूब चुका है, अब खाना खाते हैं।
पत्नी (रमेश से) — नहीं जी।
रमेश — देखो डूबा या नहीं।
पत्नी — नहीं जी.....
रमेश — लगता है ये मुझे साथ लेकर ही डूबेगा।
पिता- बेटा, 5 के बाद क्या आता है?
बेटा- 6 और 7 ?
पिता- वाह ! मेरा समझदार बेटा। और 6,7 के बाद ?
बेटा- 8,9,10।
पिता- क्या बात है बेटा वाह ! और उसके बाद ?
बेटा- गुलाम, बेगम, बादशाह।
एक आदमी 2 महीने से अस्पताल में था, जब उसे डिस्चार्ज किया जाने लगा तो उसने महसूस किया कि उसे नर्स से प्यार हो गया है...
उसने सोचा दिल की बात कह देनी चाहिए....
उसने जैसे ही नर्स को देखा तो बोला- आई लव यू नर्स...तुमने मेरा दिल चुरा लिया है...
नर्स- चल हट झूठे, हमने तो तेरी सिर्फ किडनी चुराई है...
आदमी बेहोश....अब दोबारा अस्पताल में भर्ती है....
सोहन- तुम चाय पीने के लिए किस हद तक जा सकते हो ?
रमेश- एक बार तो लड़की तक देखने चला गया था...
टीचर- बताओ संसार का सबसे पुराना जीव कौन-सा है ?
रोशन- जेबरा।
टीचर- कैसे?
रोशन- वो ब्लैक एंड व्हाइट है ना।
डॉक्टर - आपका लड़का पागल कैसे हो गया ?
पिता - यह पहले रेलगाड़ी की जनरल बोगी में सफ़र करता था।
डॉक्टर - तो उससे क्या ?
पिता - लोग उससे कहते थे- थोड़ा खिसको, थोड़ा खिसको... तभी से खिसक गया।

शांभवी चौहान
कक्षा - आठवीं

संपादक मण्डल

प्रधान संपादिका	:	हिया केशन
सहायक संपादिका	:	अवन्या जसरासरिया
सहायक संपादिका	:	अनुष्का जितानी
आवरण पृष्ठ सज्जा	:	अनिकेत अनंत जोशी
चित्रांकन	:	अवन्या जसरासरिया
मार्गदर्शक	:	हिंदी विभाग
प्रकाशन सहायता सामग्री	:	कैन्वा डॉट कॉम एवं गूगल